ETERNAL HOSPITAL

High risks of heart diseases in **COVID PATIENTS**

इटरनल हॉस्पिटल के इंटरवेंशन कार्डियोलॉजी डायरेक्टर डॉ. संजीव के शर्मा ने बताया

कोविड पेशेंट्स को हार्ट डिजीज का 15% ज्यादा

फेफड़ों के अलावा हार्ट को भी गंभीर रूप से प्रभावित करता है कोरोना

जयपुर। पश्चिमी देशों के मुकाबले भारत में हृदय संबंधित मामले 3 गुना अधिक होते हैं और अब कोरोना वायरस का हृदय पर बुरा प्रभाव पड़ने से डॉक्टर्स की चिंताएं और बढ़ गई हैं। आंकड़ों के अनुसार कोरोना से संक्रमण होने पर हृदय पर उसके विपरीत प्रभाव की संभावना 10 से 15 प्रतिशत तक बढ़ जाती है जो इसके ठीक होने के बाद भी जारी रह सकती है। संक्रमण होने के दौरान से लेकर मरीज के ठीक होने के बाद तक मुख्यतः लंग्स की बीमारी कोविड-19 सबसे पास के अंग, दिल को बुरी तरह प्रभावित कर रहा है।

कई तरह की परेशानियों का कारण

इटरनल हॉस्पिटल के इंटरवेंशन कार्डियोलॉजी डायरेक्टर डॉ. संजीव के शर्मा ने बताया कि जैसे ही वायरस शरीर में जाता है तो साइटोकाइन स्टॉर्म होने के कारण क्लॉट टेंडेंसी बढ़ने लगती है। जिससे हार्ट अटैक का खतरा काफी बढ़ जाता है। ये क्लॉट्स जब पैरों की नसों में बन जाते हैं तो मरीज को डीप वेन थ्रोम्बोसिस की समस्या होती है। फेफड़ों तक इन क्लॉट्स के पहुंचने पर पल्मोनरी एम्बोलिज्म नामक जानलेवा स्थिति बन जाती है। ब्रेन को ब्लड सप्लाई करने वाली कैरोटिड आर्टरी में क्लॉटिंग होने पर ब्रेन स्ट्रोक की जानलेवा स्थिति हो सकती है। जब वायरस हार्ट के अंदर मसल्स तक पहुंचता है उन्हें भी डैमेज करता है, जिससे मांसपेशियों में सूजन के कारण मायोकार्डियाटिस की दिक्कत हो सकती है। सांस की तकलीफ, हृदय संबंधी परेशानियां, मांसपेशियों में ब्रेकडाउन और सूजन जैसे लक्षण भी सामने आते हैं। अगर आपको पहले कभी हृदय रोग नहीं हुआ हो, तब भी आपको यह समस्याएं हो सकती हैं। जो लोग पहले से दिल की बीमारी पीड़ित हैं, उनमें कोरोना वायरस गंभीर रूप ले लेता है, यहां तक कि मौत भी हो सकती है।

कोविड से ठीक होने के बाद भी बढ़ रही समस्याएं

पोस्ट कोविड सिंड्रोम के कारण भी कई मरीजों में हार्ट की समस्याएं सामने आ रही हैं। डॉ. संजीव ने बताया कि डेली ओपीडी में कई ऐसे मरीज पहुंच रहे हैं जो कोविड नेगेटिव आ चुके हैं लेकिन उन्हें सांस लेने में तकलीफ, सीने में लगातार दर्द, ऑक्सीजन की कमी होने जैसी समस्याएं आ रही हैं। ईसीजी और कार्डियक ट्रॉपी जैसे टेस्ट करने के बाद उनमें कार्डियक डिजीज सामने आ रहे हैं। जब यह वायरस मसल्स के साथ हार्ट के कंडक्शन टिशू में इनवॉल्व हो जाता है तो हार्ट ब्लॉक हो जाता है। ऐसे मरीजों में पेस मेकर तक लगाना पड़ सकता है। वहीं जिन मरीजों में डी-डाइमर ज्यादा है उन्हें लंबे समय तक ब्लड थिनर लेना पड़ सकता है।

हार्ट पेशेंट्स को अलर्ट रहने की जरूरत

डॉ. संजीव बताते हैं कि कोरोना महामारी के दौरान हार्ट पेशेंट्स को विशेष रूप से अलर्ट रहने की जरूरत है। उन्हें बचाव पर भी ज्यादा ध्यान देना चाहिए। इसके लिए उन्हें अपना शुगर लेवल, ब्लड प्रेशर कंट्रोल में रखना होगा, खानपान बैलेंस रखें और परेशानी होने पर डॉक्टर के पास जाने में देरी नहीं करें क्योंकि हार्ट की बीमारी देरी होने पर और गंभीर हो जाती है।

दैनिक नवज्योति Jaipur City - 06 Jan 2021 - Page 2

फेफड़ों के अलावा दिल को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहा कोरोना

कोविड और पोस्ट कोविड मरीजों में हार्ट डिजीज का खतरा 15 प्रतिशत ज्यादा

ब्यूरो/नवज्योति, जयपुर। पश्चिमी देशों के मुकाबले भारत में हृदय संबंधित मामले तीन गुना अधिक होते हैं। वहीं अब कोरोना वायरस द्वारा दिल पर बुरा प्रभाव पड़ने से डॉक्टरों की चिंताएं बढ़ा दी है। आंकड़ों के अनुसार कोरोना से संक्रमण होने पर हार्ट डिजीज का खतरा 10 से 15 प्रतिशत तक ज्यादा बढ़ जाता है। इंटरवेंशन कार्डियोलॉजी डायरेक्टर डॉ. संजीव के शर्मा ने बताया कि जैसे ही वायरस शरीर में जाता है तो साइटोकाइन स्टॉर्म होने के कारण क्लॉट टेंडेंसी बढ़ने लगती है, जिससे हार्ट अटैक का खतरा काफी बढ़ जाता है। ये क्लॉट्स जब पैरों की नसों में बन जाते हैं तो मरीज को डीप वेन थ्रोम्बोसिस की समस्या होती है। फेफड़ों तक इन क्लॉट्स के पहुंचने पर पल्मोनरी एम्बोलिज्म नामक जानलेवा स्थिति बन जाती है। ब्रेन को ब्लड सप्लाई करने वाली कैरोटिड आर्टरी में क्लॉटिंग होने पर ब्रेन स्ट्रोक की स्थिति हो सकती है। जब वायरस हार्ट के अंदर मसल्स तक पहुंचता है, उन्हें भी डैमेज करता है। सांस की तकलीफ, हृदय संबंधी परेशानियां, मांसपेशियों में ब्रेकडाउन और सूजन जैसे लक्षण भी सामने आते हैं।

कोरोना से ठीक होने के बाद भी बढ़ रही समस्याएं

डॉ. शर्मा ने बताया कि पोस्ट कोविड सिंड्रोम के कारण भी कई मरीजों में हार्ट की समस्याएं सामने आ रही हैं। ओपीडी में कई ऐसे मरीज पहुंच रहे हैं, जो कोविड नेगेटिव आ चुके हैं पर उन्हें सांस लेने में तकलीफ, सीने में लगातार दर्द, ऑक्सीजन की कमी जैसी समस्याएं आ रही हैं। ईसीजी और कार्डियक ट्रॉपी जैसे टेस्ट करने के बाद उनमें कार्डियक डिजीज सामने आ रहे हैं। जब यह वायरस मसल्स के साथ हार्ट के कंडक्शन टिशू में इनवॉल्व हो जाता है तो हार्ट ब्लॉक हो जाता है। ऐसे मरीजों में पेस मेकर तक लगाना पड़ सकता है। वहीं जिन मरीजों में डी-डाइमर ज्यादा है उन्हें लंबे समय तक ब्लड थिनर लेना पड़ सकता है।

अलर्ट रहने की जरूरत

डॉ. संजीव ने बताया कि बचाव पर भी ज्यादा ध्यान देना चाहिए। इसके लिए लोगों को अपना शुगर लेवल, ब्लड प्रेशर कंट्रोल में रखना होगा, खानपान बैलेंस रखें और परेशानी होने पर डॉक्टर के पास तुरंत जाए।

Call us at : +91-9549 158 888 | www.eternalhospital.com